तथापि प्रियार्हे राज्ञि कटुनिष्ठुरोक्तिर्न युक्तेत्याशङ्क्य स्वाम्यनुज्ञया न दुष्यतीत्याशयेनाह—

द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः ।
स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे ॥ ३ ॥

अन्वयः—रहसि, स, द्विषां, विघाताय, विधातुम्, इच्छतः भूभृतः, अनुज्ञाम्, अधिगम्य, सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं, विनिश्चितार्थाम्, इति वाचम्, आददे ॥

पदार्थः—रहसि=एकान्तमें । स=वह (वनेचर) । द्विषां=शत्रुओंके, विघाताय=नाशके लिये, विधातुं=(उद्योग) करनेकी, इच्छतः=इच्छा करते हुए, भूभृतः=राजा (युधिष्ठिर) से । अनुज्ञाम्=आज्ञाको । अधिगम्य=पाकर । सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्=(शब्दोंकी) सुन्दरता और (अर्थकी) गम्भीरता विशेषसे युक्त, विनिश्चितार्थाम्=विशेष करके (युक्ति और प्रमाण द्वारा) निश्चित है अर्थ जिसका, ऐसी । इति=इस प्रकारकी, वाचम्=वाणीको । आददे=कहने लगा ।

Scanned with CamScanner

विशेष—युधिष्ठिर द्वारा दुर्योधनके राज्यमें गुप्तचर भेजना ही सिद्ध करता है कि वे अपने शत्रुओंका उन्मूलन करनेके प्रयत्नमें लगे हैं। वनेचरको उनके सामने शत्रुके उत्कर्षका वर्णन करना है अतः वह ऐसे ललित शब्दोंमें उसे कहता है कि जिससे राजा उसे अप्रिय या कर्णकटु होनेसे सुननेमें ऊब न जाँय। शब्दोंकी मधुरताके साथ ही अर्थकी गम्भीरता इसलिए आवश्यक है कि वे अपने उद्योगसे विरत न हों। उसका प्रत्येक शब्द कुछ अर्थ रखता है अर्थात युक्तियों और प्रमाणोंसे सिद्ध करके ही वह अपनी बात कर रहा है ताकि आगे क्या करना है, राजा यह निश्चित कर सकें ॥ ३ ॥

Scanned with CamScanner

स किंसखा साधु न शास्तिमोऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥

अन्वयः—यः, अधिपं, साधु, न शास्ति, स, किंसखा, यः, हितात्, न संशृणुते, स किंप्रभुः, हि, नृपेषु, अमात्येषु, च अनुकूलेषु, सर्वसम्पदः, रतिं कुरुते॥

पदार्थः—यः=जो, अधिपं=(अपने) स्वामी को, साधु = हित शास्ति = उपदेश नहीं करता, स = वह (सखा), किंसखा = कुमि (और) यः=जो। हितात् = हितकारक व्यक्तिसे, न संशृणुते = (उप नहीं सुनता, स = वह, किंप्रभुः = कुस्वामी है। (क्योंकि) नृपेषु=राजा च = अमात्येषु = मन्त्री आदिके, अनुकूलेषु = (परस्पर) अनुरक्त पर, सर्वसम्पदः = सब प्रकारकी सम्पदाएँ, रतिं=अनुराग, कुर्वते=करती

Scanned with CamScanner

भाषार्थः—जो अपने स्वामीको हितकी राय नहीं देता वह मन्त्री, मित्र या सेवक दुष्ट है और जो अपने हितैषियोंकी उचित बातको न सुनकर मनमानी करता है वह राजा भी कुराजा ही है। जब राजा और अमात्य आदि परस्पर एक दूसरेके अनुकूल रहते हैं तभी सब प्रकारकी सम्पदाओंका उपभोग करते हैं अर्थात् उन्हींकी राजलक्ष्मी सदा स्थिर रहती है।

विशेष—हित चाहनेवाले व्यक्तिका कर्तव्य है कि वह, हितकी बात चाहे सुननेमें अप्रिय ही क्यों न हो, अवश्य कहे और सुननेवालेकी भी उचित है कि हितैषीका वचन कितना ही अप्रिय हो, उसे अवश्य सुने। वनेचरका तात्पर्य है कि मैं आपका हितैषी हूँ आपकी आज्ञासे सारा भेद जानकर आया हूँ, संभव है मेरे कथनमें [illegible] आके विपक्षीकी प्रशंसाके शब्द आ सकते हैं जो आपको [illegible] लगें, फिर [illegible] आपको मेरी बात ध्यानपूर्वक सुननी ही चाहिये। अर्थात् [illegible] कहना जैसे [illegible]रा धर्म है वैसे ही अवश्य सुनना आपका भी धर्म है।

Scanned with CamScanner